Vol II Issue IX

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidiciplinary
Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue. 9, Oct 2012
ISSN:-2230-7850

Available on all social networks
citeulike

ORIGINAL ARTICLE

निस्सीम होते शब्द : शिल्प–विधान

लक्ष्मी

'शोध छात्रा, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, हरियाणा।

सारांश :

कवि रमेशचन्द्र शर्मा कृत 'निस्सीम होते शब्द' एक प्रौढ़ काव्य–संग्रह है जिसे उन्होंने चार खण्डों में विभाजित किया– काव्य कुंज, गीत–गुन्जन, ग़ज़ल–गुलिस्तां और ब्रज–माधुरी। इन कविताओं का शब्द–शब्द कवि के गहन अनुभव से रिसकर शब्दातीत हुआ है। अर्थ प्रदान करने की इसी अभियोजन सामर्थ्य ने इस यह शीर्षक दिया।

प्रस्तावनाः

काव्य के सन्दर्भ 'निस्सीम होते शब्द' शीर्षक गहरे तत्वबोध का व्यंजक है तात्विक दृष्टि से काव्य में शब्द की सता आत्मकेन्द्रित और स्वायत होती है। इसलिए एक अर्थ देने के बाद काव्य के शब्द अर्थान्तरक्षम होते हैं। काव्य में कोशगत अर्थ, कवि का मनोगत अर्थ और सहद्य का उद्भावन अर्थ–तीनों मिलकर काव्य के अभिव्यंजना सामर्थ्य को चिरनूतन बनाए रखते हैं। इसी कारण काव्य का धारक शब्द पुनर्नवा होता है। अतः यह शीर्षक न केवल कृति की आन्तरिक शक्ति का अभिज्ञापक है, बल्कि काव्यमात्र की कालातीतता का भी बोधक है।

कवि ने अपनी रचना को अत्यन्त कौशल से तराशा है यही कारण है कि इसमें खड़ी बोली का मानक प्रयोग, ब्रजभाशा का लालित्य, उर्दू भाषा की छंटा और शब्दावली की बानगी अदभुत हैः–

अरी पड़ोसन क्यूं जलती है म्हारी–उसकी जोड़ी पै।
री तन–उजली, मन की काली, मत आ होड़ा–होड़ी पै।।
म्हारे मन का दुल्हा——————
(लोक–शब्दावली)
कब, कौन कर सका कहो, पार
लिप्सा का सागर दुर्निवार।।
(मानक खड़ी बोली)
सकुन चिरैया हिन्दी मैया
(ब्रज लालित्य)

कवि हृदय में छिपे विविध रंगी भाव विशिष्ट भाषा के माध्यम से ही जनमानस तक पहुँचने में समर्थ होते है और उत्कृष्ट काव्य–कृतियों का आश्रम पाकर भाशा भी चिरकाल तक अपना अस्तित्व एवं प्राणप्रतिष्ठा बनाए रखती है। अंतः जो कवि जितना कुशल होगा उसकी भाषा भी उतनी ही श्रेश्ठ होगी इसलिए काव्य शास्त्रियों ने श्रेष्ठ काव्य उसे ही माना है जिसमें भाव पक्ष और कला पक्ष का सन्तुलित संयोजन किया गया हो। कवि का 'काव्य–कुंज' जहाँ भाव क्षेत्र की उच्च–भूमि पर अवस्थित है वहीं कला की दृष्टि से भी श्रेष्ठ है। काव्य भाषा के रूप में कवि को ब्रजभाषा अत्यन्त प्रिय रही, पर डॉ. हरिशचन्द्र वर्मा के सम्पर्क में आने के कारण उन्होंने खड़ी बोली में लिखना प्रारम्भ किया।

कवि ने भावों की प्रकृति के अनुकूल भाषा–प्रयोग में विशेष पटुता प्रदर्षित की है। ग़ज़लों में उर्दू शब्दों का प्रयोग बहुतायत से किया है परन्तु उनके शब्द हिन्दुस्तानी मिजाज के हैं। कवि की उर्दू अरबी–फारसी के दबाव से मुक्त है। यथा– आबे़ हयात प्यार का सबको पिलाइयें।

मानक खड़ी बोली के साथ ब्रज भाषा तथा उर्दू भाषा का प्रयोग किया गया है। परन्तु उनकी ब्रज सूरदास की ब्रज के समान ही सरस एंव प्रभावोत्पादक है। कवि ने भाव और शब्द–प्रयोग की दृष्टि से भी अपने काव्य को नयी आभा दी उन्होंने तत्सम, तदभव, देशज–विदेशज आदि विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया हैः–

तत्सम	–	अनुकूल, अभिसिंचित।
तद्भव	–	अच्युत, अभाव, भरकम।
विदेशज	–	सैवर, नैट, जी.टी. रोड़।
देशज	–	बरसों, भौंडापन।
उर्दू	–	ग़म, रोज़, ख्वाबों।

कवि ने इन्द्रधनुशी शब्दों का प्रयोग कर काव्य में रमणीयता एंव आकर्षण भर दिया।

यथा – सुधाकलश।

Please cite this Article as : *लक्ष्मी कठेरिया* , *निस्सीम होते शब्द : शिल्प–विधान* **: Indian Streams Research Journal (Oct. ; 2012)**

इसके साथ–साथ भाषा का सहज प्रवाह भी बना रहा, यथा–

यद्यपि न शत्रु अधिकारी था
वह पूरा पापाचारी था
अपराधी या, रण हारा था
मानवता का हत्यारा था

कोमल–कान्त–पदावली ने काव्य को प्रभावपूर्ण बना दिया। इसी कारण कवि उदात्त भाव–बोधक शब्दों का प्रयोग करने से नहीं चूकते। शब्दों की पुनरावृत्ति भी बार–बार हुई है,

यथा– शत–शत, नित–नित, पनघट–पनघट
शुद्धप्रांजल और संस्कृतनिश्ठ भाषा का प्रयोग दुष्टव्य है।

रचना को अधिक प्रभावशाली बनाने में मुहावरों और लोकोक्तियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है अंतः अपने रचनात्मक कौशल को चित्रित करने व अभिव्यक्ति को मुखर करने के लिए अनेक जगह कवि ने इनका प्रयोग किया है।

उदाहरण–

मण्डूक कूपगत आत्मतोश
छल के लाक्षागृह
मखमली पोतड़ों में पला
मुंह नोच डाले

अनुभूति और अभिव्यक्ति का अनूठा संगम हुआ है कवि जितने भावुक, कल्पनाशील और चिन्तक है उतने ही भाषा–शास्त्री व शब्द–शिल्पी भी है।

अलंकारों का प्रयोग काव्य–सौन्दर्य एंव रमणीयता की वृद्धि के लिए हुआ है जिससे भावों को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करने में सहायता मिली। अलंकारों के स्वाभाविक प्रयोग में कवि दक्ष है उनके द्वारा प्रयुक्त अलंकारों से भाषा की प्रस्तुति एवं बिम्बात्मकता में संवर्द्धन हुआ है। काव्य में प्रयुक्त मानवीकरण, प्रतीक, विशेषण, विपर्यय, रूपक दृष्टान्त, उदाहरण, उत्प्रेक्षा, उपमा, अनुप्रास तथा मूर्त के लिए अमूर्त और अमूर्त्त के लिए मूर्त्त उपमान योजना से रचनाओं की शोभा में वृद्धि हुई है। यथा–

अनुप्रासः–

मन्द–मन्द मुस्काती आकर खड़ी हो गई।
तपसी किसान जागो जागो

उत्प्रेक्षाः–

उड़ चला बगूले सा उँचा,
अति तुच्छ हेय ओछा छूँछा,

पुनरूक्तिः–

रोज–रोज जगलों के सत्र देखिये,

प्रतीकात्मकता एवं काव्यात्मकता को भी कवि ने सशक्त वाणी दी है। इसमें पौराणिक प्रतीकों का प्रयोग अधिक हुआ, जिस कारण अमूर्त्त को मूर्त करने में सहायता मिली। यह प्रतीकात्मकता 'विजय–पर्व', 'शहीदों के प्रति', 'आया पूस पठान–सा' 'एंव' 'सरस्वती–वन्दना' में अधिक दृष्टिगोचर है। 'आया पूस पठान–सा' में कवि ने पूस को पठान के प्रतिकात्मक रूप में चित्रित कर उसके प्रभाव को मानव–जीवन पर अंकित किया है। वचन विदग्धता के लिए वक्रोक्ति का भी बार–बार प्रयोग हुआ।

काव्य–गुणों में माधुर्य, ओज, प्रसाद तीनों का प्रयोग हुआ। 'दोहे सरसों के' में माधुर्यगुण से 'शहीदों के प्रति' एंव 'विजय पर्व' ओज गुण से परिपूर्ण है। संयुक्त वर्णों का मिश्रण करके परूशा वृत्ति वाली ओज गुण सम्पन्न पदावली का प्रयोग हुआ, जो वीर रौद्र, भयानक आदि रसों के अनुकूल होती है।

उदाहरणः–

जो मौत से उसकी औकात पूछे,
वो निर्भीक निश्काम नचिकेत हो तुम।

अभिधा, लक्षणा, व्यंजना में से कवि ने अभिधा और लक्षणा शब्द–शक्तियों का प्रयोग प्रचुरता से किया है। जहाँ अभिधा के प्रयोग से कविता में सहज स्वाभाविकता एवं प्रवाह है वहीं लाक्षणिकता के प्रयोग से अर्थ–गाम्भीर्य में वृद्धि हुई। 'जिन्दगी का अखबार' और 'बोलना मना है मित्र' में व्यंजना शब्द शक्ति के प्रयोग ने कविता को प्रभावशाली बना दिया। शब्द–शक्तियों के उचित प्रयोग से कविताओं में रमणीयता एवं चमत्कार–प्रियता के साथ–साथ अर्थ–गाम्भीर्य एवं उक्ति–वैचित्र्य की सृश्टि हुई है।

छंद लययुक्त होने के कारण अनुभूति को उत्प्रेरित करने में अत्यधिक सहायक होते हैं, 'भाव समाधि' और 'ओ दाई माँ' कविता में कवि

ने मुक्त छन्द का प्रयोग किया जिस कारण से दोनों ही अत्यधिक प्रभावशाली बन गई। छंद लय के आधार पर टिका नाद विधान है। छन्द में इस प्रकार के नियम होते है कि वे स्वतः ही लय में उतरते जाते हैं। सफल कवि भावों के अनुरूप काव्य को छन्द में ढाल कर उसे अमरत्न प्रदान करता है। यहाँ भी कवि ने भावों के अनुरूप ही छोटे छन्द, बड़े छन्द, कवित, दोहों तथा मुक्त छन्द का प्रयोग किया है।

उदाहरण–

मति–गति–नति, सुरताल, चाल में चाल मिलायें।

कवि का प्रयोग बेजोड़ प्रतीत होता है क्योंकि उन्होंने भगण छन्द विधान में जगण तथा सगणाश्रित लय पर आधारित छन्दों का मनोयागपूर्ण प्रयोग किया। छन्दों के सटीक प्रयोग के लिए मधुर, कोमल तथा अनुप्रासयुक्त वर्णों का ही अधिक प्रयोग हुआ।

कवि को लय और ताल के साथ–साथ वाद्य यन्त्रों का भी पूर्ण ज्ञान है। संगीत तत्व की रक्षा के लिए कवि जब प्रसाद–गुण–प्रधान शब्दावली को ग्रहण करता है तो उन पर स्वरों के अनुरूप ऐसी रंगत लाता है कि वह भी नाद–सौन्दर्य के अनुरूप हो जाता है। इसी कारण पर्व में रसात्मकता एंव प्रभावप्रवणता में वृद्धि हुई हैं।

इसके अतिरिक्त काव्य में निम्न–विधान, रस निरूपण का प्रयोग भी पूर्ण मनोयोग से किया गया है जिनमें हास्य, श्रृंगार, शांत आदि प्रमुख है।

स्पष्टतः कवि की शैली, भाव एवं शब्द–सौन्दर्य देखते ही बनता है। उन्होंने प्रतीकात्मक, लक्षणात्मक, व्यंजनात्मक जिस भी प्रकार की भाशा–शैली का प्रयोग करना चाहा, स्वछन्द होकर किया है। इनकी राष्ट्रबोध कविताओं में जहां ओजगुण की प्रधानता है वही गीत व ब्रजीली कविताएं माधुर्य गुणयुक्त है। यह अत्यंत प्रौढ़ एवं सशक्त रचना है जिस पढ़कर कोई भी पाठक इसकी विशयवस्तु की विविधिता एवं प्रांजलता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता–

देखकर 'निस्सीम होते शब्द' को
छंदमय, रसमय, सुघड़, छविबद्ध को,
सिद्ध है, यदि कवि ह्रदय में ठान लें।
प्राप्त कर सकता है अनुपलब्ध को।।

सन्दर्भ ग्रंथः–

1.अज्ञेयः कवि और काव्य–राजेन्द्र प्रसाद
2.कला–सृजन–प्रक्रिया और निराला–शिवकरण सिंह
3.हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

कोष ग्रन्थः–

1.मानक हिन्दी कोष–रामचन्द्र वर्मा
2.संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर–कृष्णानंद (सम्पादक)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net